Volume I, Issue XVI
January to March 2019

2018-19

ISSN 2394 - 3807
E-ISSN 2394 - 3513
Impact Factor - 5.190 (2017)

Divya Shodh Samiksha

(An International Refereed/ Peer Review Research Journal)

दिव्य शोध समीक्षा

Editor - Ashish Narayan Sharma

Office Add. "Shree Shyam Bhawan", 795, Vikas Nagar Extension 14/2. NEEMUCH (M.P.) 458441 (INDIA)

23. कार्ल मार्क्स और उनके विचारों की प्रासंगिकता – एक अध्ययन (डॉ. प्रदीप कुमार चतुर्वेदी) 64
24. सुकरात के विचार एवं गीता दर्शन (डॉ. आभा तिवारी, डॉ. सीमा शर्मा) 66

(History / इतिहास)

25. रीवा जिले की प्रमुख सरायें एवं धर्मशालाओं का ऐतिहासिक अध्ययन (डॉ. मो. स्वालकीन खान) 67
26. कुषाण युगीन सांस्कृतिक समृद्धि (डॉ. शुक्ला ओझा) 70
27. मुगल कालीन भारत का राजनीतिक परिवेश (डॉ. सुनीता शुक्ला) 72

(Sociology / समाजशास्त्र)

28. नगरीकरण : उभरती हुई समस्याएँ एवं चुनौतियाँ (डॉ. संजय जोशी) 73
29. बस्तर जनजाति लोकनृत्य ककसाड़ (पेन–करसीता) (डॉ. के. आर. ध्रुव, डॉ. बसंत नाग) 76
30. समाज में मीडिया की भूमिका (डॉ. कल्पना कोठारी) 79
31. सुखी जीवन के चार अनुबंध (समझौते) (डॉ. ऋचा एस. मेहता) 82
32. मानव जीवन का समग्र विकास और विज्ञान (एक मनोसामाजिक विश्लेषण) (डॉ. रश्मि दुबे) 84

(Geography / भूगोल)

33. जाँजगीर–चॉम्पा जिले में भूमि उपयोग में परिवर्तन (डॉ. कपूरचंद गुप्ता) 86
34. छत्तीसगढ़ में जनजातियों का स्वास्थ्य व पोषण संबंधी समस्याओं एवं विकास की संभावनाएँ (डॉ. प्रमोद कुमार साहू) 90

(Hindi Literature / हिन्दी साहित्य)

35. राष्ट्रीय चेतना के कवि – मैथिली शरण गुप्त (डॉ. रशीदा खान) 94
36. समाचार पत्रों में भाषा का बदलता स्वरूप (डॉ. अमित शुक्ल) 96
37. माखनलाल चतुर्वेदी एक साहित्यक संख्या (संगीता शुक्ला) 98
38. हिंदी साहित्य के शताब्दी पुरुष डॉ. राम विलास शर्मा (डॉ. सरोज जैन) 100
39. प्रथम जैन साध्वी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व (डॉ. गणेश लाल जैन) 102

(English Literature / अंग्रेजी साहित्य)

40. Tribes Of Chhattisgarh - Cultural Practices, Ethos And Ethnicity (Hemkumari Patel) 104
41. Incapability To Realize The Hidden Dark Impulses In The Characters Of K. A. Porter's Ship Of Fool's (Dr. Anita Tripathi) 107

(Drawing / चित्रकला)

DSS Divya Shodh Samiksha (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
ISSN 2394-3807, E-ISSN 2394-3513, Impact Factor - 5.190 (2017) January To March 2019, Vol. I

करोड़ों का भारतीय चित्रकार – तैयब मेहता

डॉ. यतीन्द्र महोबे *

प्रस्तावना – हल्के हरे, सफेद, पीले, नीले, लाल और घूसर सपाट रंगों से अपने कैनवास पर बड़ी-बड़ी मानवाकृतियाँ अंकित करने वाले तथा आधुनिक भारतीय चित्रकला के सशक्त स्तम्भ के रूप में खड़े विश्व प्रसिद्ध कलाकार 'तैयब मेहता' (जन्म 26 जुलाई 1925, गुजरात) से ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो कला क्षेत्र से जुड़कर अपरिचित हो। आज सपाट रंगों से युक्त इनकी रचनात्मक मानवाकृतियाँ देश-विदेश में प्रसिद्धि हासिल कर चुकी हैं, और बड़े से बड़े दामों पर बिकने के लिए प्रदर्शनियों में तैयार है।

बचपन में उन्होंने कभी सोचा नहीं था कि वह चित्रकार बनेंगे और चित्रकला के क्षेत्र में शिखर पर होंगे। तैयब मेहता अपने कला जीवन में अनेक पुरस्कारों एवं सम्मानों से विभूषित हो चुके हैं। बाल्यकाल से उनका लगाव फिल्मों से जुड़ना रहा, क्योंकि उनके पिता फिल्मों के व्यवसाय से जुड़े हुए थे। उनके अनेक सिनेमाघर थे। फिल्म डायरेक्टर बनने का शौक इन्हें बंबई लाया और 1944 में फिल्म एडीटिंग की ट्रेनिंग भी हासिल की। उसी बीच इनकी मुलाकात एक फिल्म डायरेक्टर मजीद साहब से हुई, जिन्होंने न्यू बाम्बे पेंटर्स ग्रुप की स्थापना भी की। मजीद साहब ने इनके हुनर को पहचाना और जे.जे. स्कूल ऑफ आर्टस में दाखिला भी करवा दिया। वहाँ उनकी मुलाकात सैयद हैदर रजा से हुई। रजा उनसे कला विषय पर चर्चा किया करते और उन्हें चित्र बनाने को कहते। उस समय प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप की स्थापना हो चुकी थी। तैयब मेहता प्रोगेसिव आर्टिस्ट ग्रुप से सीधे नहीं जुड़े लेकिन ग्रुप के उद्देश्यों एवं विचारों से सहमत थे।

'उस समय भारतीय समकालीन कला एकदम दिशाहीन थी, या तो चित्रकार विक्टोरियाई अंग्रेजी स्टाइल को अपनाये (जे.जे. की शिक्षा भी उसी लीक पर होती थी) था या फिर बंगाल स्कूल का अनुसरण कर रहा था। भारत आजाद हो चुका था, लेकिन कला शैली आजाद नहीं हुई थी। तैयब मेहता ने तो तय कर लिया था कि वे ब्रिटिश स्टाइल में तो कभी काम करेंगे ही नहीं और रियलिस्टिक और नेरेटिव शैली में भी काम नहीं करेंगे। उनके सिर पर जुनून सवार हो चुका था, कुछ नया और दूसरों से अलग तरह का काम करने का।'

तैयब मेहता के लिए 'कुछ नया करने का जुनून' उन्हें लंदन और पेरिस की यात्रा के लिए प्रेरित किया। वहाँ तमाम यूरोपीय कलाकारों की कलाकृतियों से रू-ब-रू हुए। धीरे-धीरे महसूस किया कि चित्र में भाव एवं अभिव्यक्ति को प्रकट करना ही रचनात्मकता है। इसी क्रम में उन्होंने प्राचीन भारतीय चित्रकारों की प्रदर्शनी भी दिल्ली में देखी जिससे काफी प्रभावित हुए।

यूरोप प्रवास के दौरान लंदन में किसी ने उनसे प्रश्न किया कि वे वहाँ किस लिए आए हैं ? तो उनका जबाब था कि चित्र होता किसके बारे में है, यह जानने के लिए। तैयब मेहता ने विभाजन के दौरान हुए दंगों को बड़ी गंभीरता से अपनी कलाकृति का विषय बनाया। चित्र शृंखला 'गिरती हुई आकृतियाँ' इसी खौफनाक घटना की गाथा कहती है। 'विभाजन के दिनों में अपने मकान की खिड़की से उन्होंने देखा था, किस तरह लोगों ने एक आदमी को पत्थरों से मार-मारकर खत्म कर दिया था। उस आदमी की निरूपराय बेबसी उनकी आँखों में तैर गई। यह खौफनाक दृश्य देखने के बाद तैयब को बुखार आ गया था। तब से यह बिंब उनके मन की भीतरी पर्त पर अंकित हो गया।' और 1955 से अब तक उनके चित्रों की मानव आकृतियों में दिखाई देता है (देखिए चित्र फलक - 51 एवं 52)। 1962 ई. में बनाया उनका एक अन्य चित्र 'रिक्शावाहक' जो मनुष्य के अर्थ को ही बदल देता है और वह सवारी या [illegible] ढोने वाला बैल बन जाता है। इस पीड़ा को भी तैयब मेहता ने अपनी कलाकृति में बखूबी चित्रित किया है।

तैयब मेहता ने अपनी मानवाकृतियों को प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत किया है। उनकी मानव आकृतियाँ आधुनिक भारत के मोहभंग, पीड़ा, संत्रास आदि को प्रदर्शित करती है। देश विभाजन की पीड़ा ने उनके चित्रों की मानव आकृतियों को भी विभाजित कर दिया। प्रारंभिक चित्रों में रंग लगाने का तरीका बिल्कुल अलग था, वह नाईफ से रंग भरा करते थे। लेकिन उनके चित्रों में सपाट रंग पद्धति का संयोजन दिखाई देता है। अब चित्रों की मानव आकृतियों के बीच आड़ी-तिरछी गहरी रेखायें प्रभावमान हैं।

'अपने चित्रों में वे काली को हमेशा पेंट करना चाहते थे, किन्तु वे [illegible] को उसके लिए उपयुक्त नहीं मानते थे। मुँह से जीभ बाहर निकाले, [illegible] पहने एक काले रंग की महिला बना देना ही काली जैसे महाशक्तिवान [illegible] के चित्रांकन के लिए काफी नहीं है। काली के चित्र में भावना आनी [illegible] कहते हैं, तैयब मेहता जब वे बंगाल में रहे, तब उन्हें काली माँ के [illegible] आभा की अनुभूति हुई, और उन्होंने काली माँ का चित्र बनाया। इनमें [illegible] नीले रंग और लपलपाती तरल जीभ के अलावा काली के अन्य [illegible] पारंपरिक प्रतिभा विधान को नहीं रखा गया है। शांति निकेतन प्रवास [illegible] दौरान तीन पैनल का एक अद्भुत चित्र बनाया, जिस पर अध्यात्म [illegible] दर्शन के विचारक तथा महात्मा गांधी के नाती डॉ. रामचन्द्र गांधी ने [illegible] पुस्तक लिख डाली। पुस्तक में चित्र की आकृतियों एवं भाव मुद्राओं [illegible] व्याख्या की गई। एक अध्याय में पिकासों के प्रसिद्ध चित्र 'गुएर्निका' [illegible] इसकी तुलना की गई है। 1985 में बने इस चित्र के बारे में तैयब ने [illegible] कि जब वह शांतिनिकेतन में थे उन्होंने संथाली द्धारा नये साल [illegible] पूजा का उत्सव देखा। नाचते गाते आदिवासी, रस्सियों से तना [illegible] में एक बांस का स्तम्भ जहाँ पूजा हो रही है। एकाएक एक औरत [illegible] में आई, पूजा की और देखते ही देखते न जाने कहाँ गायब हो गई। [illegible] बकरे की बलि, खून का तिलक आदि तमाम बिंब जो उनके मन [illegible]

* [illegible]